गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विश्वविद्यालय में श्रीअन्न उत्सव के अंतर्गत श्रीअन्न पर एक–दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

पंतनगर। 23 अगस्त 2025। गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में चल रहे तीन–दिवसीय 'श्रीअन्न उत्सव' के आखिरी दिन श्रीअन्न से निर्मित विभिन्न खाद उत्पादों/व्यंजनों का कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं स्वयं सहायता समूह द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत सरकार के राज्य सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री अजय टम्टा द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा सभी के प्रयासों की प्रशंसा की गयी। प्रदर्शनी के भ्रमण के बाद 'विकसित राष्ट्र के लिए भारत में श्रीअन्न की पुनः खोज (रिमाइंडर–2025) विषय पर एक–दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गयी।

संगोष्ठी में अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि श्री अजय टम्टा ने श्रीअन्न को बढ़ावा देने के लिए पंतनगर विश्वविद्यालय के प्रयासों की प्रशंसा की और कहा कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री के दूरदर्शी मार्गदर्शन में भारत श्रीअन्न के संवर्धन में एक वैश्विक लीडर के रूप में उभर रहा है। श्रीअन्न हमारी सांस्कृतिक विरासत और पोषण सम्बन्धी धरोहर है। इसे पुनर्जीवित करना केवल भोजन के लिए ही नहीं, बल्कि किसानों की आय, राष्ट्रीय स्वास्थ्य और सतत कृषि के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने आश्वासन दिया कि सरकार श्रीअन्न की खेती, प्रसंस्करण और विपणन को मज़बूत करने के लिए प्रतिबद्ध है और उन्होंने कहा कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) एवं अन्य सार्वजनिक पोषण योजनाऐं जैसे प्रधानमंत्री पोषण अभियान, आगंनवाणी आदि में श्रीअन्न को शामिल करने का प्रयास किया जायेगा।

विशिष्ट अतिथि के रूप में तेलंगाना के मिलेट मैन के नाम से प्रसिद्ध श्री वीर शेट्टी पाटिल ने श्रीअन्न उद्यमिता में अपनी सफलता की कहानी सभी उपस्थितजनों से साझा की और श्रीअन्न को एक व्यावसायिक अवसर के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि यदि हम मूल्य संवर्धन, ब्रांडिंग और प्रत्यक्ष विपणन पर ध्यान केंद्रित करें, तो श्रीअन्न ग्रामीण उद्यमिता की रीढ़ बन सकता है। युवाओं को शहरी आहार में श्रीअन्न को एक महत्वाकांक्षी और आधुनिक बनाना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने कृषि परिवर्तन में पंतनगर विश्वविद्यालय की अग्रणी भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि 'हरित क्रांति का नेतृत्व करने के बाद, पंतनगर अब श्रीअन्न क्रांति का नेतृत्व करने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि श्रीअन्न जलवायु अनुकूल फसलें हैं जिनके स्वास्थ्य लाभ अपार हैं इनको उगाने में कम संसाधनों की आवश्यकता होती है और ये कृषि प्रणालियों को लचीलापन प्रदान करती हैं। उन्होंने प्रजातियों के विकास, कटाई, पश्चात तकनीकों और किसान प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विश्वविद्यालय की पहलों पर प्रकाश डाला। उन्होंने एक नई पहल की भी घोषणा करते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के 23 छात्रावासों में सप्ताह में दो दिन श्रीअन्न आधारित उत्पादों को भोजन में शामिल किया जाएगा। इससे न केवल छात्रों को श्रीअन्न की पौष्टिकता से परिचित कराया जाएगा, बल्कि समाज में उनकी व्यापक स्वीकृति को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने बताया कि उद्यान अनुसंधान केन्द्र, पत्थरचट्टा में आम की प्रजाति का नाम ऑपरेशन सिंदूर के नाम पर रखा गया है। उन्होंने वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों से आहवान किया कि वे दैनिक कार्यों के लिए ही नहीं अपितु नये–नये नवाचारों को प्रदर्शित की आवश्यकता है, जिससे अगले 5 वर्षों में विश्वविद्यालय में श्रीअन्न की एक ऐसी प्रजाति विकसित करें जो विश्वविद्यालय के साथ–साथ पहाड़ के किसानों को भी उपलब्ध करायी जाये, जिससे किसान की आमदनी में वृद्वि होगी। उन्होंने यह भी बताया कि सेना के साथ हुए समझोते के परिपेक्ष में सेना के भोजन में श्रीअन्न आधारित उत्पादों के समावेश हेतु सेना के 17 सैफ को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

कार्यक्रम संयोजक एवं निदेशक शोध डा. ए.एस. नैन ने मोटे अनाजों पर चल तीन–दिवसीय कार्यक्रम की रूप रेखा बतायी तथा उन्होंने कुपोषण से निपटने और ग्रामीण उद्यमिता में नए अवसर पैदा करने के लिए श्रीअन्न को कृषि पद्धतियों, आधुनिक आहार और खाद्य नीतियों में मुख्यधारा में लाने के महत्व पर बल दिया।

आयोजन सचिव एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण डा. ए.एस. जीना ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला और यह भी बताया कि जनरल बिपिन सिंह रावत संस्थान श्रीअन्न महोत्सव के अंतर्गत सक्रिय रूप से कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित कर रहा है, जिसमें वाद–विवाद, प्रश्नोत्तरी, पोस्टर और स्लोगन प्रतियोगिताएं शामिल हैं, साथ ही छात्रों को श्रीअन्न के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए एक व्याख्यानमाला का भी आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले स्थानीय स्कूल के बच्चों एवं विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को मुख्य अतिथि एवं कुलपति द्वारा पुरस्कृत किया गया। श्रीअन्न द्वारा कुल 77 व्यंजनों पर अधारित डा. अर्चना कुश्वाहा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय एवं अन्य लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों का विमोचन किया गया। सत्र का समापन संयुक्त निदेशक शोध डा. पी.के. सिंह द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने गणमान्य व्यक्तियों, आयोजकों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अपराह्न में आयोजित तकनीकी सत्र में डा. सत्येन यादव, अध्यक्ष, मिलेट इनिसीएटिव, डा. मुजिबर रहमान खान, पूर्व अधिष्ठाता, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी; श्री वीर शेट्टी पाटिल, मिलेट्स मैन, तेलंगाना द्वारा श्रीअन्न (मोटे अनाज) पर विस्तृत व्याख्यान दिये गये तथा सत्र में प्रतिभाग कर रहें प्रतिभागियों द्वारा मौखिक एवं पोस्टर का भी प्रदर्शन किया गया।

इस संगोष्ठी में शोधकर्ताओं, किसानों, महिला स्वयं सहायता समूहों, छात्रों और उद्यमियों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। साथ ही विश्वविद्यालय के कुलसचिव, अधिष्ठाता, निदेशकगण, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।